“बहुत बुद्धि के साथ बहुत दुख भी आता है” का क्या मतलब है?

जब हम सभोपदेशक 1:18 पढ़ते हैं, तो कई लोग चौंक जाते हैं क्योंकि इसमें लिखा है:

“क्योंकि जितनी अधिक बुद्धि है, उतना ही अधिक दुख; और जो
ज्ञान बढ़ाता है, वह दुःख भी बढ़ाता है।”
(सभोपदेशक 1:18)

यह सुनकर ऐसा लगता है जैसे बुद्धि पाने का मतलब दुःख भी लेना है—लेकिन क्या बाइबल यह नहीं कहती कि हमें बुद्धि की तलाश करनी चाहिए?

इसका जवाब पाने के लिए हमें यह समझना होगा कि सुलैमान किस संदर्भ में और किस तरह की बुद्धि की बात कर रहे हैं।

1. सभोपदेशक का संदर्भ: “सूरज के नीचे” की बुद्धि

सभोपदेशक की पुस्तक राजा सुलैमान के विचारों का संग्रह है, जिन्हें परमेश्वर ने अद्भुत बुद्धि दी थी (1 राजा 4:29-30)। यहाँ वे “सूरज के नीचे” यानी दुनिया के मानव और सांसारिक पहलुओं को देख रहे हैं। वे मानवीय मेहनत, सुख, ज्ञान और सफलता की खोज कर रहे हैं कि आखिर स्थायी खुशी कहां है।

“बहुत बुद्धि के साथ बहुत दुख भी आता है” का क्या मतलब है?

सभोपदेशक 1:13 में सुलैमान लिखते हैं:

“मैंने मन लगाया, समझ से देखना कि जो कुछ भी होता है वह सब
‘सूरज के नीचे’ क्यों होता है। यह देखकर मन बड़ा बोझिल हो गया
कि परमेश्वर ने मनुष्यों पर कितना बड़ा बोझ रखा है।”

यहाँ वे दिव्य ज्ञान की बात नहीं कर रहे, बल्कि केवल मानवीय अनुभव और सोच के आधार पर दुनिया को देख रहे हैं। इसलिए, इतने विचार-विमर्श के बाद वे कहते हैं कि यह सब “हवा के पीछे भागने जैसा” है (सभोपदेशक 1:14)। कुछ भी संतुष्ट नहीं करता।

तो जब वे कहते हैं “बहुत बुद्धि के साथ बहुत दुख भी आता है”, तो इसका मतलब है कि जब हम जीवन की सच्चाइयों—जैसे अन्याय, पीड़ा, और नश्वरता—को गहराई से समझते हैं, तो यह हमारे दिल पर भारी पड़ता है।

2. सांसारिक बुद्धि और परमेश्वर की बुद्धि में अंतर

बाइबल हमें सांसारिक और परमेश्वर की बुद्धि के बीच फर्क समझाती है।

सांसारिक बुद्धि अक्सर इंसानी उपलब्धियों, दर्शन या बौद्धिकता

“बहुत बुद्धि के साथ बहुत दुख भी आता है” का क्या मतलब है?

पर टिकी होती है, जो अंततः खालीपन और बोझ महसूस करा सकती है। “इस संसार की बुद्धि परमेश्वर के सामने मूर्खता है।” (1 कुरिन्थियों 3:19)

वहीं, परमेश्वर की बुद्धि सही संबंध से शुरू होती है।
“प्रभु का भय बुद्धि की शुरुआत है, और पवित्र को जानना समझ
है।” (नीतिवचन 9:10)

सच्ची बुद्धि परमेश्वर के चरित्र के अनुरूप होती है और यह हमें शांति, नम्रता, और अनंत दृष्टिकोण देती है।

3. यीशु मसीह: परमेश्वर की बुद्धि का स्वरूप

नए नियम में, हमें पता चलता है कि यीशु मसीह स्वयं परमेश्वर की बुद्धि हैं।

“उन सब के लिए जिन्हें परमेश्वर ने बुलाया है, चाहे यहूदी
हों या यूनानी, मसीह परमेश्वर की शक्ति और परमेश्वर की
बुद्धि है।” (1 कुरिन्थियों 1:24)

“बहुत बुद्धि के साथ बहुत दुख भी आता है” का क्या मतलब है?

इसलिए सांसारिक ज्ञान से होने वाले दुःख के विपरीत, मसीह को जानना जीवन, शांति, और विश्राम देता है। वे उन लोगों को आमंत्रित करते हैं जो थके-हारे और बोझ तले दबे हैं—जैसे सुलैमान भी थे—कि वे उनसे आराम पाएं:

“हे सब थके हुए और बोझ उठाए हुए, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।
मेरी जुआ अपने ऊपर लो, और मुझसे सीखो, क्योंकि मैं नम्र और दिल से विनम्र हूँ, और तुम्हें अपनी आत्मा के लिए विश्राम मिलेगा।
क्योंकि मेरा जुआ सरल है और मेरा बोझ हल्का है।”
(मत्ती 11:28-30)

4. निष्कर्ष: वह बुद्धि खोजें जो परमेश्वर की ओर ले जाए

सभोपदेशक 12:13 में सुलैमान कहते हैं:

“अब यह सब सुन लिया; सब कुछ जो कहा गया, इसे समझो: परमेश्वर
का भय रखो और उसके आदेशों का पालन करो, क्योंकि यह मनुष्यों का सारा कर्तव्य है।”

“बहुत बुद्धि के साथ बहुत दुख भी आता है” का क्या मतलब है?

अर्थात्, जो बुद्धि सच में हमें संतुष्ट करती है, वह वह है जो हमें परमेश्वर का भय रखने और उसकी राहों पर चलने के लिए प्रेरित करती है।

तो हाँ, बुद्धि की तलाश करें—पर वह बुद्धि जो आपको मसीह की ओर ले जाए। सांसारिक बुद्धि आपको पीड़ा दिखा सकती है, लेकिन परमेश्वर की बुद्धि आपकी आत्मा को शांति देती है।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp